राजनीति में औरतों की सक्रिय भागीदारी हो

वीणा शिवपुरी

हाल में कुछ प्रदेशों में हुए चुनावों के दौरान कई बातें सामने आईं। हर राजनीतिक पार्टी ने अपने भाषणों और घोषणापत्रों में औरतों का ज़िक्र किया। उनकी ताक़तमंदी के कार्यक्रम चलाने से लेकर उनके लिए हर जगह सीटें आरक्षित करने की बात की। अब तक जिन्हें कोई अहमियत नहीं दी जाती थी। जिनका वोट पाने के लिए उनके मर्दों से बात करना काफ़ी समझा जाता था। अब सीधे उन्हें संबोधित किया गया। यहां अहम बात राजनीतिक पार्टियों की ईमानदारी नहीं, बल्कि वह मजबूरी है जिसके तहत उन्हें औरतों को महत्व देने की बात करनी पड़ रही है। यह अपने आप में मील का पत्थर है।

इन चुनावों से एक और बात सामने आई। पिछले वर्षों में महिला वोटरों की गिनती बहुत बढ़ी है। इसके पीछे गैर-सरकारी संस्थाओं की मेहनत, औरतों में बढ़ती जागरूकता आदि हैं। अब औरतें बहुत बड़ी संख्या में वोट देने आती हैं। अब उनके वोट उनके परिवार के मर्दों के कब्जे में नहीं हैं। खुशी की बात यह भी है कि औरतें वोट बेचने को तैयार भी नहीं हैं। इस तरह का वोटर किसी भी राजनीतिक दल के लिए चुनौती होता है। उसे नज़र-अंदाज नहीं किया जा सकता।

भविष्य की तस्वीर

अब साफ समझ में आ रहा है कि आने वाले समय में सभी राजनीतिक दल महिला वोटरों को लुभाने की पूरी कोशिश करेंगे। इस प्रकार औरतों तथा उनके साथ काम करने वाली संस्थाओं की ज़िम्मेदारी बहुत बढ़ जाती है। अगले साल होने वाले आम चुनावों तक औरतों में राजनीतिक जागरूकता फैलाने का काम लगातार होना चाहिए।

राजनीतिक समझ चार दिन में नहीं आती। उसके लिए अपने वोट का महत्व, अपने हक़ों की जानकारी होना ज़रूरी है। राजनीतिक दलों के घोषणापत्रों को उनके काम की कसौटी पर कसना पड़ेगा। अपनी ज़रूरतों और मांगों की प्राथमिकता तय करनी होगी। ताकि चुनाव के समय अलग-अलग दलों का लेखा जोखा किया जा सके। अपनी मांगें उनके सामने रखी जा सकें। बाद में जवाब-तलबी की जा सके।

भविष्य में औरतें चुनावी राजनीति में एक बड़ी ताकत के रूप में उभर सकती हैं। ज़रूरत है काफ़ी मेहनत की, ताकि वे अपनी ताक़त का इस्तेमाल अपने फ़ायदे के लिए कर पाएं।

राजनीति में सक्रिय भागीदारी

अब एक और बड़े बदलाव का समय आ गया है। औरतें सिर्फ़ वोट देने और सहूलियतें मांगने वाली न रहें। वोटर की हैसियत से उनकी भूमिका ज़रूर महत्वपूर्ण है। परंतु अब समय है राजनीतिक अखाड़े में कूदने का। गांव से लेकर देश के स्तर तक राजनीति में भागीदारी करने का।

आज तक जो भी औरतें राजनीति में आई हैं वो किसी की बेटी, बहन या पत्नी के रूप में। लेकिन अपने काम से उन्होंने यह ज़रूर साबित कर दिया कि वे राजनीतिक दांव-पेंच में किसी से कम नहीं। अब ज़रूरत है कि वे अपनी इच्छा से, समझ-बूझ कर स्वतंत्र रूप से इसे अपना पेशा चुनें।

पंचायती राज कानून के 1993 के संशोधन के तहत औरतों के लिए 30 प्रतिशत सीटें आरक्षित हैं। यह अपने आप में बड़ा कदम है। इसका फायदा उठाते हुए औरतों को अपनी राजनीतिक भागीदारी की शुरुआत बड़े पैमाने पर कर देनी चाहिए।

यह सही है कि आरक्षण के बावजूद वर्ग, जाति जैसे कई मुद्दे सामने खड़े होंगे। कई मामलों में औरतें सिर्फ़ नाम के लिए चुनाव लड़ेंगी और जीतेंगी। असली खेल पीछे से उनके मर्द खेलेंगे। इन सभी खतरों के प्रति सावधान रहने की ज़रूरत है।

पंचायत में चुनी जाने वाली औरतों के पास अनुभव, जानकारी और आत्मविश्वास की कमी भी हो सकती है। इन सभी रुकावटों को पार करते हुए आगे बढ़ना है। □

तुमकुर का पंचायती राज

पंचायती राज अधिनियम पास हुआ। लोगों की उम्मीदें जागीं। औरतों की भागीदारी राजनीति में सक्रिय रूप से होने की आशा बंधी। पर ऐसा नहीं हुआ। मूल्यांकन से पता चला ज्यादातर चुनाव अभियान पार्टी आधारित थे। लिहाज़ा महिला संगठनों की इनमें कोई भूमिका नहीं थी। सामाजिक बंधनों, पैसे की कमी के कारण भी वे बढ़-चढ़कर हिस्सा लेने से सकुचाती हैं। पर कर्नाटक के तुमकुर ज़िले का उदाहरण इससे बिलकुल विपरीत है।

बंगलौर से सौ किलोमीटर दूर स्थित है तुमकुर ज़िला। इस सूखे-पिछड़े इलाके में 1693 औरतें चुनी गई हैं। और इन सभी औरतों को पूरा ज़िला प्रशासन जोर-शोर से सशक्त और जागरूक बनाने में लगा है। आइए देखें, कैसे?

यहां के ज़िला अधिकारियों ने इसके लिए 23 से 26 अक्तूबर तक चार दिनों का कार्यक्रम तय किया। लगभग पचास प्रतिशत घरों को मुख्यालय में बदला गया। साथ ही घरों को अच्छी तरह से सजाया-संवारा भी गया।

ज्यादातर चुनी गई सभी औरतें इस कार्यक्रम में शामिल हुईं। कार्यसूची बनाने, कार्यकर्ता और संपर्क सूत्र जुटाने और कार्यक्रम चलाने तक की व्यवस्था की जिम्मेवारी इलाके के एन.एल.एम. अधिकारियों ने उठाई।

ताक़त का अहसास

औरतें इस कार्यक्रम के प्रति बहुत उत्साहित थीं। कार्यक्रम के दौरान निर्वाचित औरतों के रहन-सहन के विभिन्न तरीकों को लेकर चर्चा हुई। औरतों को लगा कि पंचायती राज में महिलाओं की सीट आरक्षित होने की वजह से उन्हें घर-बाहर की दुनिया देखने-समझने का मौका मिला। कई औरतों का कहना था कि अगर आरक्षण वापस भी ले लिया जाए तब भी वह अपने अधिकार वापस लेंगी। पुरुषों से मुकाबला करेंगी। बिना आरक्षण चुनाव लड़ेंगी।

उन्हें लगा कि वे भी पुरुषों की तरह काम कर सकती हैं। आरक्षण से उन्हें जो मौका मिला है उसका पूरा-पूरा फ़ायदा उठाकर उसका सदुपयोग वे ज़रूर करेंगी। यह ज़िम्मेवारी बोझ न बन जाए या फिर थोड़े दिन के बाद उनका उत्साह ठंडा न पड़ जाए, इसलिए वे इसके लिए अलग से समय निकालती हैं। घर का काम जल्दी से निपटा कर बैठक में आती हैं। बैठक में समय से पहुंचने के लिए काम छोड़ भी देती हैं।

विरोध का सामना

ऐसा नहीं है कि इन औरतों को परेशानी का सामना नहीं करना पड़ रहा। एक औरत ने बताया कि शुरू में उसके पति ने उसे पंचायती राज की सदस्या बनने के लिए उत्साहित किया। पर जब देखा कि वह सक्रिय हो गई तब उसे रोकने की कोशिश करने लगे।

ग्राम सभा की महिलाओं को भी पंचायत सदस्याओं से शिकायत है। उनका मत है कि सभी सदस्य वोट तो मांगते हैं पर बदले में कुछ नहीं करते। इस टिप्पणी से एक पंचायत सदस्या बहुत शर्मिंदा हुई। बाद में उन्होंने अपने खर्चे से सड़क पर बिजली लगवाई।

एक अन्य औरत का कहना है कि भाषा न समझ पाने के कारण उनके पति उनके साथ सभी बैठकों में जाते हैं। इसी गांव में एक हरिजन निर्वाचित महिला को अध्यक्षा ने बहुत दबा-धमका कर रखा था। यह अध्यक्षा भी हरिजन थी, पर पढ़ी-लिखी और वाचाल।

फिर भी पंचायत की सदस्याएं सजग, सचेत लगीं। पंचायत के सातों गांवों में उन्होंने ग्राम सभा की बैठक आयोजित की। ये औरतें मेधावी और मुखर हैं। पर पूरी तरह पंचायत के और अपने अधिकारों के बारे में जानकारी उन्हें मुहैया नहीं थी। देश के दूसरे भागों में क्या हो रहा है, इस पर भी उनके पास कोई खबर नहीं थी।

फिर भी कार्यक्रम की गतिशीलता और कोशिशों को नज़र-अंदाज नहीं किया जा सकता। कार्यक्रम से औरतों में आपसी स्नेह और आत्मीयता बढ़ी है। जो औरतें इस बार कार्यक्रम में हिस्सा नहीं ले सकीं उन्होंने निश्चय किया कि वे अगली दफा इस मौके को हाथ से नहीं जाने देंगी। जो इस बार चुनाव में नहीं खड़ी हुईं वे अगले साल चुनाव लड़ने का मन बना रही हैं। □

जानकारी साभार ISST
समाचार पत्रिका से